

गोरखनाथ चालोसा

दोहा

गणपति गिरजा पुत्र को सुमिरूँ बारम्बार।
हाथ जोड़ विनती करूँ शारद नाम आधार॥

चौपाई 1

जय जय गोरखनाथ अविनाशी।
कृपा करो गुरुदेव प्रकाशी॥

चौपाई 2

जय जय जय गोरख गुण ज्ञानी।
इच्छा रूप योगी वरदानी॥

चौपाई 3

अलख निरंजन तुम्हरो नामा।
सदा करो भक्तन हित कामा॥

चौपाई 4

नाम तुम्हारा जो कोई गावे।
जन्म जन्म के दुःख मिट जावे॥

चौपाई 5

जो कोई गोरख नाम सुनावे।
भूत पिशाच निकट नहीं आवे॥

चौपाई 6

ज्ञान तुम्हारा योग से पावे।
रूप तुम्हारा लख्या न जावे॥

चौपाई 7

निराकार तुम हो निर्वाणी।
महिमा तुम्हारी वेद न जानी॥

चौपाई 8

घट घट के तुम अन्तर्यामी।
सिद्ध चौरासी करे प्रणामी॥

चौपाई 9

भस्म अंग गल नाद विराजे।
जटा शीश अति सुन्दर साजे॥

चौपाई 10

तुम बिन देव और नहीं दूजा।
देव मुनि जन करते पूजा॥

चौपाई 11

चिदानन्द सन्तन हितकारी।
मंगल करण अमंगल हारी॥

चौपाई 12

पूर्ण ब्रह्म सकल घट वासी।
गोरखनाथ सकल प्रकाशी॥

चौपाई 13

गोरख गोरख जो कोई ध्यावे।
ब्रह्म रूप के दर्शन पावे॥

चौपाई 14

शंकर रूप धर डमरू बाजे।
कानन कुण्डल सुन्दर साजे॥

चौपाई 15

नित्यानन्द है नाम तुम्हारा।
असुर मार भक्तन रखवारा॥

चौपाई 16

अति विशाल है रूप तुम्हारा।
सुर नर मुनि जन पावें न पारा॥

चौपाई 17

दीन बन्धु दीनन हितकारी।
हरो पाप हम शरण तुम्हारी॥

चौपाई 18

योग युक्ति में हो प्रकाशा।
सदा करो सन्तन तन वासा॥

चौपाई 19

प्रातःकाल ले नाम तुम्हारा।
सिद्धि बढ़े अरु योग प्रचारा॥

चौपाई 20

हठ हठ हठ गोरक्ष हठीले।
मार मार वैरी के कीले॥

चौपाई 21

चल चल चल गोरख विकराला।
दुश्मन मार करो बेहाला॥

चौपाई 22

जय जय जय गोरख अविनाशी।
अपने जन की हरो चौरासी॥

चौपाई 23

अचल अगम है गोरख योगी।
सिद्धि देवो हरो रस भोगी॥

चौपाई 24

काटो मार्ग यम को तुम आई।
तुम बिन मेरा कौन सहाई॥

चौपाई 25

अजर अमर है तुम्हरी देहा।
सनकादिक सब जोरहिं नेहा॥

चौपाई 26

कोटिन रवि सम तेज तुम्हारा।
है प्रसिद्ध जगत उजियारा॥

चौपाई 27

योगी लखे तुम्हारी माया।
पार ब्रह्म से ध्यान लगाया॥

चौपाई 28

ध्यान तुम्हारा जो कोई लावे।
अष्टसिद्धि नव निधि घर पावे॥

चौपाई 29

शिव गोरख है नाम तुम्हारा।
पापी दुष्ट अधम को तारा॥

चौपाई 30

अगम अगोचर निर्भय नाथा।
सदा रहो सन्तन के साथ॥

चौपाई 31

शंकर रूप अवतार तुम्हारा।
गोपीचन्द भरथरी को तारा॥

चौपाई 32

सुन लीजो प्रभु अरज हमारी।
कृपासिन्धु योगी ब्रह्मचारी॥

चौपाई 33

पूर्ण आस दास की कीजे।
सेवक जान ज्ञान को दीजे॥

चौपाई 34

पतित पावन अधम अधारा।
तिनके हेतु तुम लेत अवतारा॥

चौपाई 35

अलख निरंजन नाम तुम्हारा।
अगम पन्थ जिन योग प्रचारा॥

चौपाई 36

जय जय जय गोरख भगवाना।
सदा करो भक्तन कल्याना॥

चौपाई 37

जय जय जय गोरख अविनाशी।
सेवा करें सिद्ध चौरासी॥

चौपाई 38

जो ये पढ़हि गोरख चालीसा।
होय सिद्ध साक्षी जगदीशा॥

चौपाई 39

हाथ जोड़कर ध्यान लावे।
और श्रद्धा से भेंट चढ़ावे॥

चौपाई 40

बारह पाठ पढ़े नित जोई।
मनोकामना पूर्ण होई॥

समापन दोहा 1

सुने सुनावे प्रेम वश पूजे अपने हाथ।
मन इच्छा सब कामना पूरे गोरखनाथ॥

समापन दोहा 2

अगम अगोचर नाथ तुम पारब्रह्म अवतार।
कानन कुण्डल सिर जटा अंग विभूति अपार॥

समापन दोहा 3

सिद्ध पुरुष योगेश्वरो दो मुझको उपदेश।
हर समय सेवा करूँ सुबह शाम आदेश॥